बच्चों की परवरिश एक चुनौती

हाल ही में घटी कुछ घटनाओं ने सोचने को विवश कर दिया कि क्या वाकई हमारे बच्चे वही बन रहे हैं जो हम उन्हें बनाना चाहते हैं। वैसे तो हर माँ बाप अपने बच्चे के लिए एक अच्छे भविष्य का सपना देखते हैं। परंतु हमारे किशोर और युवा आज जिस तरह की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं उससे तो यही सवाल उठता हैं कि क्या बच्चों की परवरिश ठीक से हो रही हैं? लड़कियों से छेड़छाड़, दुष्कर्म जैसे घिनौने अपराध हो या आपसी लड़ाई झगड़े में चाकूबाजी जैसे संगीन अपराध, यहां तक कि दोस्तों के अपहरण और हत्या जैसे दुष्कृत्यों में भी किशोरों का हाथ होने की खबरें आये दिन अखबारों की सुर्खियां बनती हैं। किशोर वय के ये अपराधी कई बार अच्छे, सम्पन्न और पढ़े लिखे परिवारों के बच्चे होते हैं। कई के माँ बाप ऊंचे ओहदों के इज्जतदार लोग होते हैं। कितनी ही बार ये बच्चे खुद भी नामी स्कूलों के छात्र होते हैं। फिर क्या कारण हैं कि बच्चे इस तरह की गलत वारदातों को अंजाम दे रहे हैं । बात की तह तक जाने पर एक बात बहुत साफ तौर पर निकल कर आती हैं कि कहीं न कहीं बच्चों की परवरिश में भारी कमी हैं। माता पिता आज बच्चों को अच्छा घर, कपड़े, खेल खिलौने और हर संभव सुख सुविधाये दे रहे हैं। यथाशक्ति अच्छे स्कूल, कोचिंग आदि में प्रवेश दिलाकर अपनी जिम्मेदारी को पूर्ण समझ लेते हैं । कामकाजी हों या घरेलू, माता पिता के पास बच्चों के लिए समय ही नहीं हैं। स्कूल के बाद बच्चा क्या कर रहा हैं, कहाँ, किसके साथ आ जा रहा हैं। उसकी संगति कैसे बच्चों से हैं। घर पर पढ़ाई के बहाने टीवी या इंटरनेट पर क्या देख रहा हैं, इसकी जानकारी रखना आवश्यक नहीं समझते। विशेष तौर पर लड़कों के बारे में तो अधिकांश माता पिता बिल्कुल ही बेपरवाह होते हैं। यहां तक कि कई परिवारों में तो लड़कों को किसी भी तरह की रोकटोक को बुरा माना जाता हैं। हां लड़कियों पर बिना वजह प्रतिबंध लगाये जाते हैं पर लड़कों को खुली छूट हैं वो कहीं भी आएं जाएं, कितनी भी देर रात तक घर आएं आदि आदि।

एक और कमी लड़कों में नैतिक शिक्षा और संस्कारों की हैं। वास्तव में आज भी अनेक घरों में यही माहौल हैं कि नैतिक शिक्षा और संस्कारों की आवश्यकता केवल लड़कियों को ही हैं, लड़कों को इसकी कोई जरूरत नहीं । क्या माँ बाप की यह सोच सही हैं? हमारे पुरुष प्रधान परिवारों में लड़कों को शुरू से ही घर की महिलाओं यानी माँ या बहनों पर रौब जमाने का विशेषाधिकार मिला होता हैं। उस पर भी अफसोस की बात यह हैं कि अधिकांश घरों में महिलाओं का सम्मान नहीं किया जाता। बच्चों के सामने ही पिता उनकी माँ का अपमान करते हैं और दुर्व्यवहार करते हैं। कई परिवारों में बेटे बेटियों में भेदभाव किया जाता हैं। आज भी हमारे समाज में महिलाओं का स्थान शोषित और पुरुषों का शोषण कर्ता के रूप में ही बना हुआ हैं। ये सब न केवल कम शिक्षित और उच्च शिक्षित, ग्रामीण और शहरी, सभी तरह के परिवारों में सामान्य हैं। परिणाम स्वरूप लड़कों के मन में बचपन से ही महिलाओं के प्रति दोयम दर्जे का व्यवहार करने की मानसिकता दृढ़ हो जाती हैं। मौका पाते ही वे छेड़छाड़ या दुष्कर्म जैसे अपराध करने से भी नही चूकते।

किशोरों द्वारा लूट, चोरी जैसे अपराध भी बहुत सामान्य हैं। इसके पीछे कई बार आर्थिक कठिनाईयों से ज्यादा उनकी बढ़ती हुई महत्वाकांक्षाएं ही होती हैं। आज के भौतिकवादी युग में हर कोई पैसे की ओर भाग रहा हैं। किशोर और युवा किसी भी तरह तेजी से खूब सारा धन पाना चाहते हैं। छोटे गांवों से पढ़ने या काम की तलाश में आये किशोरों को बड़े शहरों का ग्लैमर और चकाचौंध आकर्षित करता हैं। किसी भी तरह और जल्दी से अमीर बनने की चाहत किशोरों को अपराध की दुनिया में खींच लाती हैं। इसके साथ ही हमारे देश का कानून किशोरों और नाबालिगों के प्रति कुछ ज्यादा ही नरम हैं जिसका फायदा आज के तथाकथित स्मार्ट किशोर उठाकर कठोर सजा से बच जाते हैं साथ ही ऐसे उदाहरणों से दूसरों में भी सजा का डर जाता रहता हैं।

बच्चों को स्मार्ट बनाने वाला मोबाइल और इंटरनेट भी अपराध करने में एक हद तक जिम्मेदार हैं। आज का किशोर इंटरनेट की दुनिया में वो सब कुछ पा लेता हैं जो कभी कल्पनाओं में भी नहीं होता था । जोश, उत्तेजना, रोमांच और तरह तरह की चुनौतियों से भरी यह दुनिया बच्चों के अबोध मन पर गहरा प्रभाव डालती हैं। और बच्चे भी कुछ नया चुनौती पूर्ण करने की चाह में अनजाने ही ऐसी घटनाओं को अंजाम दे देते हैं ।

इन सब के साथ ही बच्चों में धार्मिक और नीतिगत शिक्षा का अभाव भी एक बहुत बड़ा कारण हैं कि बच्चे आज अच्छे बुरे का भेदभाव भूलते जा रहे हैं । आज माता पिता भी बच्चों में धार्मिक एवं नैतिक संस्कार देने में असफल हो रहे है । एकल परिवारों में रहने के कारण बुजुर्गों से मिलने वाली इस अमूल्य संपदा से बच्चे वंचित हो रहे है । संस्कार के अभाव में वे अपनी जड़ों से दूर होते जा रहे हैं । इसका दुष्परिणाम हमारे सामने है । प्रेम, शालीनता, सहनशीलता, सामंजस्य व महिलाओं का सम्मान आदि गुणों का महत्व कम होता जा रहा है इसके स्थान पर उनमें ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थपरता, आगे बढ़ने की होड़ हो रही है । कोई भी एक दिन में अपराधी नहीं बन जाता है । बचपन से ही छोटी मोटी बदमाशियाँ शुरु होती है । जो माता पिता के अति लाड़ प्यार वश नजर अंदाज करने के कारण धीरे धीरे बड़े अपराधों में बदल जाते हैं। वास्तव में आज के वातावरण में बच्चों का लालन पालन माता पिता के लिए किसी चुनौती से कम नहीं हैं। इसके लिए अपने बच्चों को भौतिक सुविधाओं के अलावा समुचित समय देना भी आवश्यक हैं। उनकी दैनिक गतिविधियों पर नजर रखना जरूरी हैं। घर के बाहर ही नहीं, अंदर भी बच्चों के बिगड़ने के प्रचुर साधन मौजूद हैं। इसलिए माता पिता को हर पल सजग रहने की जरूरत हैं। बच्चों के जासूस न बन उनके दोस्त बनकर रहें और समय समय पर सलाहकार बनें। हमारे बच्चे हमारी अमूल्य धरोहर हैं। उनकी समुचित देखभाल करें और उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाएं। **– सहसंपादिका अनुपमा जैन**

सोशल मीडिया से...

एक 6 वर्ष का लडका अपनी 4 वर्ष की छोटी बहन के साथ बाजार से जा रहा था अचानक से उसे लगा कि, उसकी बहन पीछे रह गयी हैं । वह रुका, पीछे मुड़कर देखा तो जाना कि, उसकी बहन एक खिलौने के दुकान के सामने खडी कोई चीज निहार रही हैं । लडका पीछे आता हैं और बहन से पूछता हैं, ''कुछ चाहिये तुम्हें?'' लडकी एक गुड़िया की तरफ उंगली उठाकर दिखाती हैं। बच्चा उसका हाथ पकडता हैं, एक जिम्मेदार बडे भाई की तरह अपनी बहन को वह गुड़िया देता हैं। बहन बहुत खुश हो जाती है । दुकानदार यह सब देख रहा था, बच्चे का प्रगल्भ व्यवहार देखकर आश्चर्यचकित भी हुआ.....

अब वह बच्चा बहन के साथ काउंटर पर आया और दुकानदार से पूछा, '' सर, कितनी कीमत है इस गुड़िया की?'' दुकानदार एक शांत और गहरा व्यक्ति था, उसने जीवन के कई उतार देखे थे, उन्होंने बड़े प्यार और अपनत्व से बच्चे से पूछा, ''बताओ बेटे, आप क्या दे सकते हो ??'' बच्चा अपनी जेब से वो सारी सीपें बाहर निकालकर दुकानदार को देता हैं जो उसने थोड़ी देर पहले बहन के साथ समुंदर किनारे से चुन चुन कर बीनी थी । दुकानदार वो सब लेकर यूँ गिनता हैं जैसे कोई पैसे गिन रहा हो। सीपें गिनकर वो बच्चे की तरफ देखने लगा तो बच्चा बोला, ''सर कुछ कम हैं क्या??''

दुकानदार – ''नहीं–नहीं, ये तो इस गुड़िया की कीमत से भी ज्यादा हैं, ज्यादा मैं वापस देता हूँ'' यह कहकर उसने 4 सीपें रख ली और बाकी की बच्चे को वापिस दे दी । बच्चा बड़ी खुशी से वो सीपें जेब में रखकर बहन को साथ लेकर चला जाता है। यह सब उस दुकान का कामगार देख रहा था, उसने आश्चर्य से मालिक से पूछा, ''मालिक! इतनी महंगी गुड़िया आपने केवल 4 सीपों के बदले में दे दी ?''

दुकानदार एक स्मित संतुष्टि वाला हास्य करते हुये बोला, '' हमारे लिये ये केवल सीप हैं पर उस 6 साल के बच्चे के लिये अतिशय मूल्यवान हैं और अब इस उम्र में वो नहीं जानता, कि पैसे क्या होते हैं ? पर जब वह बडा होगा ना..... और जब उसे याद आयेगा कि उसने सीपों के बदले बहन को गुड़िया खरीदकर दी थी, तब उसे मेरी याद जरुर आयेगी, और फिर वह सोचेगा कि यह विश्व अच्छे मनुष्यों से भी भरा हुआ हैं। यही बात उसके अंदर सकारात्मक दृष्टिकोण बढाने में मदद करेगी और वो भी एक अच्छा इंसान बनने के लिये प्रेरित होगा।

*** रिशिका जैन, सनावद**

पत्र संपादक के नाम....

* आपकी पहल बहुत ही सराहनीय है समाज को ऐसे समाचार पत्र की बहुत ही जरुरत है जिसमें सभी प्रकार की खबरों का समावेश हो । वर्ग पहेली का प्रकाशन नियमित करे । परन्तु एक शिकायत है आपके अंक नियमित प्राप्त नहीं होते है, ऐसा क्यों। – शिखा जैन, सागर

* बायोडाटा विशेषांक बहुत ही अच्छा प्रयास है, विवाह योग्य बच्चों की जानकारियां संपूर्ण गोलालारीय समाज को नि:शुल्क पहुंचाने का आपका यह कदम अनुकरणीय है । विवाह योग्य बच्चों के परिवारों को बिना किसी मेहनत के जानकारियां प्राप्त हो रही है, इससे अच्छा कोई कार्य नहीं हो सकता है । – सीमा जैन, जबलपुर

संपादकीय उत्तर – हमारे द्वारा 4200 परिवारों को पत्रिका नियमित रुप से साधारण डाक के द्वारा प्रेषित की जाती है । प्रत्येक जिले के बंडल पृथक पृथक बनाकर डाक विभाग को सौंपे जाते है । डाक व्यवस्था के कारण पत्र नहीं पहुंचने पर अपने नगर के मुख्य डाक घर पर संपर्क कर पत्र नियमित होने के लिए आवेदन करें ।